सतत अध्यापक शिक्षा केन्द्र (C.T.E.C)

Centres of Continuing Education for Teachers

अध्यापक-शिक्षा और अध्यापकों के कार्यों में अलगाव पाया जाता है। शिक्षा के प्रत्येक पहलू की विषय-वस्तु में परिवर्तन होता रहता है। इन नवीन परिवर्तनों एवं विकास का लाभ तभी सम्भव हो सकता है, जब विद्यालय के अध्यापकों को इनका पूर्ण ज्ञान हो क्योंकि इन परिवर्तनों की व्यावहारिकता तथा उपयोगिता इनका शिक्षक पर ही निर्भर करती है। इसलिए अध्यापकों के लिए लगातार शिक्षा केन्द्र की आवश्यकता का अनुभव किया गया।

आज देश की आवश्यकता है कि एक बड़ी संख्या में प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षकों को सतत शिक्षा केन्द्रों द्वारा नये परिवर्तनों से परिचित किया जाए। इन्हें नवीन पाठ्यक्रमों एवं समस्याओं से अवगत कराया जाए।

पूर्व सेवा तथा सेवारत अध्यापकों की ~~शिक्षा के विकास~~ कार्यक्रमों में समन्वय स्थापित करने से इन दोनों को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

Appointments

(I) पूर्व सेवा के प्रशिक्षण कार्य में, सेवारत अध्यापकों की शिक्षा के लक्ष्यों एवं अभिप्रेरणाओं की जानकारी दी जाय।

(II) सेवारत अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रमों में भाग लेने वाले अध्यापकों का मूल्यांकन की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

(III) सेवारत शिक्षा के कार्यक्रम की व्यवस्था अवकाश के दिनों में की जानी चाहिए, जिससे उन्हें विद्यालय से अनुमति मिल सके।

(IV) इन कार्यक्रमों की व्यवस्था क्षेत्रीय स्तर पर विशेषज्ञों द्वारा की जानी चाहिए। स्थानीय आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखा जाय

(V) सेवारत अध्यापक शिक्षा केन्द्र द्वारा नवीन ज्ञान, नवीन शिक्षण विधियों तथा प्रविधियों हेतु की जाय, जिनकी व्यावहारिकता तथा उपादेयता अधिक हो या समस्या समाधान में सहायक हो।

(VI) अध्यापकों को इन कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए उनको स्वेच्छा से बुलाना चाहिए। कोई दबाव न दिया जाय।

प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षकों हेतु वृहत प्रसार सेवा की व्यवस्था की गई है- इन केन्द्रों की सफलता स्वेच्छा पर अधिक निर्भर करती है। अध्यापक सतत् शिक्षा की व्यवस्था कई प्रकार से की जाती है।

M	T	W	T	F	S	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

Appointments

पत्राचार तथा सम्पर्क कार्यक्रम द्वारा सैद्धान्तिक ज्ञान तथा व्यावहारिक कौशलों की जानकारी दी जाती है तथा अभ्यास कराया जाता है।

दूरवर्ती - शिक्षा (Distance Education)

द्वारा भी इस प्रकार प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाती है। इन साधनों में विशेषज्ञों को बुलाया जाता है तथा पाठों को लिखवाया जाता है। चार प्रकार के पत्राचार कार्यक्रमों को सतत शिक्षा के लिए प्रयुक्त किया जाता है —

1. पुनर्निर्देशन पत्राचार पाठ्यक्रम।
2. व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम।
3. निरीक्षकों तथा वरिष्ठ अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु।
4. शिक्षकों तथा प्राध्यापकों को रेडियो तथा दूरदर्शन - माध्यमों से प्रशिक्षण की व्यवस्था।

इन केन्द्रों को भली - भाँति सुसज्जित किया जिससे दूरगामी शिक्षा द्वारा सतत शिक्षा की सुविधाएँ उपलब्ध हो सके।

Scanned with CamScanner

Appointments

अध्यापक शिक्षा के लक्ष्य -
The Goals of Teacher Education

अध्यापक शिक्षा उद्देश्यपूर्ण प्रणाली है। इसके कुछ विशेष उद्देश्य हैं।

इसलिए प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक कुशल शिक्षकों की प्राप्ति के लिए अध्यापक शिक्षा की व्यवस्था की गई है। इस शिक्षा के द्वारा अध्यापकों में हम भिन्न-भिन्न योग्यताओं और कुशलताओं की अपेक्षा करते हैं उन्हीं-2 योग्यताओं और कुशलताओं का विकास करना अध्यापक शिक्षा का उद्देश्य होता है। उद्देश्य और लक्ष्य दो बातें हैं। लक्ष्यों में व्यापक दृष्टि से राष्ट्रीय हित देखा जाता है।

लक्ष्यों के निर्धारण के लिए शिक्षा-दर्शन, राष्ट्रीय प्रगति तथा सामाजिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में विचार करने की आवश्यकता होती है। अध्यापक शिक्षा के व्यापक हित लाभों के सन्दर्भ में हम इसके लक्ष्यों को स्पष्ट करेंगे।

① मनुष्य ही मानव संसाधन होने लायक है। अध्यापक शिक्षा का लक्ष्य मानव संसाधन का विकास करना है। जब मानव संसाधन की वृद्धि होगी तभी राष्ट्र मूल्य तथा लक्ष्य प्राप्ति हो सकेगी।

② मनुष्य मानवीय स्तर से बहुत नीचे गिर गया है, इसी कारण समाज का स्वरूप

भी बिगाड़ गया है। मानवीय और सामाजिक मूल्यों की रक्षा अध्यापक अपनी शिक्षा के द्वारा कर सकता है - इसलिए किसी भी राष्ट्र के लिए योग्य शिक्षकों की अहम भूमिका होती है।

(3) हमारे पूर्व पूर्वजों ने जो ज्ञान अर्जित किया है, उस ज्ञान कोष का संरक्षण, संवर्धन और अगली पीढ़ी को हस्तान्तरण के लिए अध्यापक की महत्ता बढ़ जाती है।

(4) उच्च कोटि के शाश्वत मानव मूल्यों, सांस्कृतिक परम्पराओं तथा नैतिक आचरण से सम्बन्ध रखने वाली मान्यताओं की रक्षा के लिए अध्यापक शिक्षा की व्यवस्था (महत्ता) बढ़ जाती है।

(5) अध्यापक शिक्षा का लक्ष्य मानवीय गुणात्मक पक्ष को विकसित करना है जिससे की प्रशिक्षण के द्वारा यह व्यापक रूप ले सके। दक्षता और कुशलता की प्राप्ति प्रशिक्षण पक्ष की देन हो सकता है पर मानवीय भावनात्मक, संवेगात्मक और विचारात्मक पक्ष जितना प्रबल होगा उतना ही वह न्याय धर्म, जीव धर्म और त्याग धर्म आदि का पक्षधर बनेगा।

अध्यापक शिक्षा के सामान्य उद्देश्य
General aims of Teacher Education

फ्लान प्रोजेक्ट (1963) पर निर्मित समिति के अनुसार — "अध्यापक शिक्षा का उद्देश्य नये शिक्षकों में विषय-ज्ञान के अतिरिक्त शिक्षण कौशल एवं तकनीकों के बारे में जानकारी को बढ़ाना है। साथ ही सामाजिक आदर्श एवं समाज स्वीकृत व्यवहार प्रारूप को विकसित करने के साथ-साथ उनमें प्रजातांत्रिक एवं विकासात्मक अर्थव्यवस्था संदर्भित अभिवृत्ति एवं मूल्य तथा रुचि आदि को भी विकसित करना है।"

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49)

आयोग में कहा गया है कि अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य को निर्धारित करते समय अध्यापक के निर्माण पर अधिक बल दिया जाना चाहिए। अच्छा अध्यापक वही है जो अपने कार्य तथा उद्देश्यों के प्रति सजग हो। "जितना अधिक वह अपने विषय से प्रेम करे उससे अधिक अपने छात्रों से उसे प्रेम करना चाहिए।"

The more he loves his subject, the more he should love his students.

यह देखना चाहिए कि इसके द्वारा पढ़ाये गये शिष्यों की क्या उपलब्धियाँ हैं। अन्य शब्दों में- शिक्षकों की सफलता उसके शिष्यों की योग्यता से की जानी चाहिए। "The success of teachers should be done by the ability of his disciples."